(7)

सूलीपर इजोत

एवं अन्य नाटक



राम भरोस कापडि भ्रमर



प्रकाशक

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

सुलीपर इजोत

एवं अन्य नाटक

राम भरोस कापडि भ्रमर

प्रकाशक
जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

कृति	:	सूलीपर इजोत एवं अन्य नाटक
लेखक	:	**रामभरोस कापड़ि भ्रमर**
प्रकाशक	:	जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान, जनकपुर
प्रकाशन प्रति	:	५०० प्रति
प्रकाशन वर्ष	:	२०७२।२०१५
सर्वाधिकार ©	:	लेखकमे सुरक्षित
मोल	:	रु. १००।-
आवरण कला	:	आ बौधु बाजि उठल नाटकक एकटा दृश्य
मुद्रण	:	

Suli par ejot ewan anya natak (Play)
By Ram Bharos Kapari 'Bhramar'

एहि संग्रहक प्रसंग

नेपालीय मैथिली नाट्य(साहित्यक क्षेत्रमे नाटकक दुःस्थिति देखि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क मौन औनाइत की रहल जे चिन्तन ओ उद्‌भावनाक क्षेत्रमे नाट्य लेखनक यात्रा आरम्भ कयला ई सत्य थिक जे नेपालक मल्लकालीन युगमे नाटकक विकास चरमोत्कर्ष पर रहल। मुदा, बादमे चलिकऽ नाटकक दुःस्थिति भऽ गेल। तैं भ्रमरक लेखन एही तापमे तपिकऽ नेपालीय मैथिली साहितयकें गति आ दिशा देबाक क्रममे नाट्य(लेखन दिस अग्रसरित भेल। ओना, ई सत्य अछि जे भ्रमर जे आधुनिक नाटककें सही सोच आ दृष्टिक संग सर्जनाक परिर्वतनकारी लय हिनके लेखनीक क्षमता ओ ऊर्जस्विता थिक। ओ मञ्चकें देखैत, पात्रा(नुकूल भाषामे नवीन युगक नव यथार्थकें उभारिकऽ क्रान्तिक सूत्रपात ओहि ढङ्गे कयल जे उपेक्षित वर्गक पीड़ा ओ बोलकें अभिव्यक्ति देल। हिनक मोनक उपजामे अन्तर्ध्वनित सत्य उभरिकऽ पाठक ओ दर्शकक सोझाँ की आयल जे नव संस्कार ओ संवेदना लऽ प्रस्फुटित भेल। ईहो सत्य थिक जे हिनक पूर्वक नाटक परम्परान्वेषी रहल, मुदा क्रमिक विकासक क्रममे बादक नाटक नव कश्य ओ शिल्पमे नव अर्थवत्तासँ युक्त नव विचार(भूमि लऽ आयल। हिनक नाटक लघु होइत अछि, बुझी तँ एकाङ्की।

ईहो स्पष्ट भऽ देब आवश्यके जे मैथिली जगतमे प्रवेश करिते मिथिला(मैथिलीक प्रति अनुराग(भाव भ्रमरक हृदयमे उफान की मारैत छल जे ओ आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक भण्डार भरय लगलाह। पहिने कविता, कथा, आलेख आ टिप्पणी इत्यादिक उपरान्त प्रायः सभ विधामे ओ लेखनी चलोलनि। ओ मात्र लिखलनि नहि, अपन उपस्थितिबोध दर्ज करोलनि। एहिमे हिनक दूटा कारक तत्व प्रमुख रहल अछि((१) मिथिला(मैथिलीक प्रति प्रेम (२) सामाजिक कुव्यवस्थाक प्रति विद्रोह(भाव। एहिमे दुनू भाव ऊपरा(ऊपरी। दोसर कनेक बेसिए एहि हेतु जे आक्रोशक लपलपाइत भाव बेसिए खूजिकऽ उभरि आयल। कारण अछि, सामन्ती व्यवस्थाक प्रति विद्रोह। जातिगत असमानता होअय वा धार्मिक भेद(भाव। किएक तँ ई दुनू कोनो ने कोनो प्रकारेण जाति ओ धर्मक नामक पर समाजक मुँहपुरुषक देहमे तेनाकऽ नाग(नगिन जकाँ गछारल अछि जे बात(बातमे बिक्ख वमन करैत अछि। परम्परा, विचार आ संवेदनाक रसायनमे लेखनीकें डुबाकऽ भ्रमर अपन लेखकीय(शक्तिक उपयोग लोकमे नव जागरण अनबाक उद्देश्यें कयल अछि जे लोक जगत तँ नव समाजक निर्माण होयत। तैं सामाजिक विकारकें हटबैत लोकमनमे भावप्रवण संवेदनशीलताक रस प्लावित करैत लोकजीवनक व्यापक चित्र। उपरुथापित कयल अछि।

भ्रमर प्रायः मैथिलीक सभ विधामे लिखलनि निस्सन्देह हिनक काव्य(क्षेत्र

विस्तृत अछि आ दोसर स्थान पर कथा। नाटक लेखन(क्षेत्रमे ओ संघर्षरत छथि आ विकासक क्रममे दनादन सचेतन भावें नाटक लेखन दिस उन्मुख भेलाह अछि।

गमैया छल(क्षुद्रभक जीवन्त प्रस्तुति थिक 'आ बौधु बाजि उठल'। ई कथा गाम(गामक थिक। नीक आ बेजाय दुनू प्रवृत्तिक लोक रहिते अछि। चाहक दोकान्दार अछि जे चाह बेचिक ऽ सपरिवार गुजर(बसर करैत अछि। ओकरा जगह(जमीन नहि छैक आ ने एहि गामक वासी अछि। ओ गैरमजरुआ जमीनमे दोकान फोलने अछि। ओकरा एहि बातक रंचोमात्र लेश नहि छैक जे ओ बाहरी अछि। किएक तँ गामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व अर्थात् ग्राम प्रधान 'राम असीस' अर्थात पुरुष(१ आ गा.वि.स.क अध्यक्ष अयोधी चौधरी अर्थात् पुरुष(२ कें कोनो आपत्ति नहि छैक। ओ दुनू गोधियाँ थिक आ बौधुक दोकानमे बैसिकऽ संगे चाह पीबैत अछि। दुनू व्यक्तित्व मिलिकऽ गाममे शान्ति बनाकऽ राख्य चाहैत अछि। कोनो बात भऽ(झंझटिक वा केहनो किएक ने होअय, आपसीमे पर(पंचैती अथवा बुझा(सुझाकऽ सलटिया लेल जाइत अछि जे बात आगाँ बढिकऽ कोट(कचहरी ने पहुँचि पाबथ। दुनूक अकबाली होयबाक फायदा गौंआ(घरुआकें की भेटि जाइत छैक जे बौधु कऽ लैत अछि। मुदा, पुरुष(३ अर्थात् 'हरिशचन्दर' सन कुटिल लोकक अभाव सेहो नहि अछि जे स्वार्थ सिद्धिक खातिर कतेक नीचा धरि खसि पड़ैत अछि जे कुत्सित योजना बनबैत अछि। अपन स्वार्थ सिद्धि होवत ने देखि अर्थात् 'डीलरशीप' नहि भेटबाक क्षोभमे 'रूपचन्दर' सँ मिलिकिऽ कुत्सित योजना बनबैत अछि। ओ दुनू मिलिकऽ चालि की चलैत अछि जे राम असीस ओ अयोधी चौधरीक बीच वैमन्स्यता पसारिकऽ एक(दोसरकें फुटका दैत अछि। ओ दुनू गोधियाँक बीच घृणाक देबाल ठाढ़कऽ एक(दोसरक सभर्थक अर्थात् गौआ(घरुआक बीच दू पार्टी कऽ लाड़ि(भूजि दैत अछि जे अधिकारी टोल आ चौधरी टोलक बीच तनातनी मचि जाइत छैक। एतेक दूर धरि जे नीक लोककें गाममे रहब धरि मोश्किल भऽ जाइत छैक। हरिश्चन्दर आ रूपचन्दक सभटा खेरहा(बात बौधु जनैत अछि। ओकरा इहो मोने छैक जे ओकरे समक्ष चाहक दोकान पर दुनू गोधियाँक मादे अदखोइ(बदखोइ बजैक। ततबेक नहि, हरिश्चनदर तँ ओकर पत्नी रघुनाथपुरवाली कें सेहो ओकेर सासुक मादे बढ़ा(चढ़ाकऽ बातबिगाड़य चाहैक आ एतेक दुर धरि जे सलाइ सेबाकाल ओकर हाथ दबा देलकैक। रघुनाथपुरवाली ओकर कुचालिकें गमि(बुझि की नेने रहैक जे बाजि उठलि('केकरो बहु(बेटकें एना नै करक चाही'। मुदा, हरिश्चन्दरक कुचालि सफल होयबासँ पहिने बौधुक मुँह फोलब सभ बातक भण्डाफेड़ कऽ देलकैक आ कराम(कराम मचैत दुनू टोलक लाककें वास्तविकताक मान होइते दुनू गोधियाँ

वुझि की जाइत छैक जे हरिश्चन्दर आ रूपचनकें पड़यबाकबाट नहि सूझैत छैक। ओ दुनू घेराकऽ पकड़ा की जाइत अछि जे दंड देबाक पूर्ण अधिकार बौधुकें देल जाइत अछि। इतः तितःमे पड़ि बौधु दूटा बात गछबा लैत अछि (एक तँ एहि दुनू पापीकें माफ कऽ दियौ आ दोसर दुनूकें समितिक काममे लगा दियौ। कारण, पेट भरल रहतै तँ मनो स्व्च्छ स्वच्छ रहतै'। तँ पुरुष(४ बाजल रहैक 'जाहि गाममे बौधु सन बेटा आ तोरा रन पुतहु रहतै, गाममे किछु नै होतै' वस्तुतः पुरुष(२ अर्थात् अयोधी चौधरी बाजि उठैत अछि('बौधु, हमरा सबकें ई गर्व ने हेवाक चाही जे तोहुँ एहि गामक सन्तान छें।' एहि प्रकारें एहि नाटकमे सत्यक जीत देखाकऽ आदर्श, नै तिकता ओ सत्यक सनेस विलहैत मानवीय मूल्यबोधक महत्ता दर्शाओल गेल अछि। एहिमे नाटकीयता अछि जे घटना प्रधान एहि नाटककें आरो ऊँचाइ पर लऽ जाइत अछि। पछिड़ल वर्गक बदलैत जन चेतनाकें देखाकऽ नाटककार भ्रमर नव जीवनमूल्य स्थापित करबाक निमित्त वास्तविकताकें यथार्थक भूमि पर उतारिकऽ सत्य आ हकक द्वन्द्व उभारल अछि। तँ निस्सन्देह ई कृतिक अपन सार्थक महत्ता अछि।

परम्परामे आधुनिकताकें मिश्रीत कऽ प्रयोगपरक रचना भेल अछि 'सूली पर इजोत' रूपकमे। एहिमे सामाजिक विकृति ओ विसंगतिकें उभारिकऽ प्रयोग कलाक दृष्टिएँ नव प्रयोग कयल अछि। एहिमे अछि वर्तमान आ वर्तमान सत्यक त्रासदीमे मुक्तिक कामना सन्निहित अछि। मोनक भ्रम आ मोहक शंकाकें निवारण करैत मानवीय मूल्यधरक आस्था ओ विश्वासकें प्रकट कयल गेल अछि जे यथार्थपरक ओ संघर्षपरक टकराहटिमे स्वार्थ आ निःस्वार्थक अनुगूंज प्रतिहवनित भेल अछि। जीवनक क्रूर यथार्थकें उभारिकऽ स्थिति(परिस्थितिगत मानवीय मनोदशाक चित्रण भेल अछि। ओ दबल(कुचललवर्गमे नव बौद्धिक चेतनाक निर्माणक लेल विराट अन्हारसँ लड़बाक ओरियाओनमे मुट्ठी भरि इजोतक कामनामे हाथ(पयरकें लाड़ैत(चारैत मेहनति, बुद्धिओ लग्नशीलताक प्रयोग पर बेस बल देल गेल अछि। आत्म छल आ फतबा बाजीसँ मुक्त भऽ नव मोहाविराकें चीन्हबाक(परेखबाक क्रममे नव प्रतिभानक खोज भेल अछि। तँ इन्क्लाब आर किछु आनय वा नहि, इन्क्लाबी नारा कोनो नव क्रान्तिक सूत्र(पात कऽ पृस्ठभूमि बनिए सकैत अछि। भनहि कोनो ईशाकें सत्य बात कहबाक लेल किएक ने शूली पर चढ़ा देल जाउक। इन्क्लाब अबस्से एकटा नव बातक अनुसन्धान थिक। बेनग्न समाजक किरदानी कोनो छपित नहि अछि। जाति, धर्म, भाषा, वेश(भेष आदिक नाम पर अनाचार, भ्रष्टाचार, घूस आदि पराकाष्ठा पर की पहुँचि वेश गेल अछि जे बलात्कार, हत्या, चोरी(डकैती आदि आम बात भऽ गेल अछि। मानवता आ नृशंसताकें छटिअयबाक लेल, अन्हारसँ इंजोतमे अयबाक उपक्रममे हिम्मति आ विश्वासबलें

जीचनकैं साकार करय चाहैत अछि। तैं इजोतकैं तकबाक अभिलाषी अछि। किएक तँ इजोते जीवन थिक आ आत्माक धुकधुकी सेहो। लक्ष्य धरि पहुँचबाक लेल, जीवनकैं पयबाक लेल इजोत जे शूली पर टाङ्गल अछि तकरा उतारिकऽ आनय पड़त। ई बात कृषक अर्थात् पुरुष(२ क मुँहे सुनैत अछि जे हर आ पालोक सीढ़ी, बड़का पैना पोदान आ जैरसँ बान्हि(छेकिकऽ सीढ़ी बनाकऽ इजोतकैं शूली परसँ उतारि लेब।

एहि नाटकमे महिला पात्रक माध्यमसं समसामयिक राजनितिपर कडगर ब्यंग्य कएल गेल अछि त महिला प्रतिक सामाजिक दृक्ष्टिकोणकें प्रकारान्तरसं बिरोध कएल गेल अछि।

एहि प्रकारैं 'सूली पर टाङल इजोत' कविताकैं रूपक बनाकऽ नाटककार राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' निस्सन्देह प्रयोग कऽ आधुनिक नाट्य रूप देल अछि जे अन्तर्मनकैं छुबैत अछि आ अपन नव स्वाद जगयबाक फलस्वरूप उच्च कोटिक कलाकृति बनैत अछि। एहिमे परिवेश, चरित्र ओ संवादक क्रममे कथ्य कें तेनाकऽ मिश्रीत कयल गेल अछि जे नाटकीयता चरमोत्कर्ष पर पहुँचि सशक्ततामे जामिकऽ प्रभाव आड़ि जाइत अछि। जीवनक सुच्चा छवि प्रतिबिम्बित भेल अछि जे सत्य अछि।

तेसर नाटक हम पढब लिखब विद्मान बनबमे नेपालक ग्रामीण क्षेत्रमे जे अपन धीआ पूताके स्कूल पठएबास बेसी घर आंगन आ बाध बोनक काजमे धीआपूताके लगएबाक चलनसारि एखनो छैक, तकर सुन्दर आ मार्मिक प्रसतुति भेल अछि। नेपाली सरकार पढौनीमे सालके करोडो अरबो खर्च बरैत अछि मुदा प्रतिफल ततेक नहि भेटि पबैत छैक। ताहुसं सरकारी विद्यालयक अबस्था दिन प्रतिदिन कमजोर आ पढाई लिखाई चौपट भेल जा रहल अछि। एहि नाटकमे विद्यार्थी आ विद्यार्थी विचमे, विद्यार्थी आ शिक्षक विचमे जे कोनो कारणे असमझदारी रहैत छैक ओ शिक्षकसभक काविलियतसं कोना हटि क सौहार्दपूर्ण वातावरण कनैत छैक आ पढाई लिखाईसं दूर भाग चाहैत विद्यार्थीसभमे पढाई प्रतिक लगाव उत्पन्न करैछ तकर नीक चित्रण भेल खछि।

कहबाक जररति नहि नेपालमे कोनो नेपालीय नाटककारक नाटक जं सबसं बेसी मंचपर जाइत छन्हि त ओ भ्रमर थिकाह। हुनक एकटा आओर बसन्त, भैया अएलै अपन सोराज, जट जटिन,सूलीपर इजोत,आ बौधु बाजि उठल सन सन एक दर्जनस उपर लघु आकारक नाटकसभ छैक जे विरन्तर मंचपर दर्शककें अपनासंग बन्हैत रहल अछि।

ई लघु संग्रह मंचपर नाटकके उतारबाक रुचि रखनिहारक जेतु अबश्य उपयोगी हउत से विश्वास अछि।

दीपावली : २०१५ **चन्द्रेश,दरभंगा**

आ बौधु बाजि उठल

पात्र-स्थिति

१. बौधु - (उमेर) ३५ वर्ष - चाहक दोकानदार।
२. पुरुष - १ (उमेर ४५ वर्ष) - गामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व।
३. पुरुष - २ (उमेर ४५ वर्ष) - गा.वि.स.क अध्यक्ष।
४. पुरुष - ३ (उमेर ४० वर्ष) - गामक कुटिल व्यक्तित्व।
५. पुरुष - ४ (उमेर ५० वर्ष) - गामक भलमानस व्यक्तित्व।
६. रुपचन्द (उमेर ३६ वर्ष) - गामक कुटिल व्यक्तितव।
७. छोटे (उमेर १० वर्ष) - बौधुक बेटा।
८. महिला (उमेर ३० वर्ष) - बौधुक पत्नी।
९ गोराइत (उमेर ४० वर्ष) - गा.वि.स.क पिएन।

दृश्य- १

(गामक चौक। चौक पर एकटा चाहक दोकान। तीन कातसं बेंचसभ धयल। दूटा खुरसी, कठघराक एकचारीक भितर राखल। बौधु भगत चाहक पानी गरम करैत। बेंच पर एकदू गोटे चाहक चुस्की लैत। ताबत् पुरुष १ आ पुरुष २ क प्रवेश।)

पुरुष १ : की रे बौधुआ ! चाह- ताह छौ कि ?

बौधु : जी मालिक ! बैसल जाआ ! (बेरा- बेरी स भितर धयल खुरसी बाहर आनि लगा दैछ। दुनू चाह पीब बंला पीबि क चलि जाइछ।)

पुरुष २ : बौधु ! की छै गामके हाल-चाल ?

बौधु : (केतलीसं दुध ढारैत) हजुर ! अपने गामक परधान छिऐ। सब बात बुझ्झते छिऐ। हम की जनबै हजुर !

पुरुष १ : तैयो तोरा दोकान पर त सब रंगके लोक अबैछौ ने। बजैत होतौ बात सब।

बौधु : मालिक, अइअ त समय काट बला सभ रहै छै। ओकर बात पर धीआन देल जाए त सब काम चौपट भ जएतै।
(दुनूके चाह बढबैछ।)

पुरुष २ : (चाह लैत) ठीके कहै हे गोधिंआ। अहू धीआपुताबला बात पुछै छिऐ। रे अइठाम त सब रंगके लोक अबै है। सबके बारेमे सब रंग

बजै है। एना जे सबके बात ई कह लगौ त एकर रोजी रोटी चलतै ?

बौधु : (लजाइत सन) ई त अपने सभके कृपा है सरकार !

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश)

पुरुष ३ : (दुनूके देखैत) एह, दुनू मालिक एक्केठाम !

पुरुष १ : की बात छौ। बड हकासल- पिआसल बुझाइ छे।

पुरुष ३ : बाते ओएह है, हजुर। आइ कयक दिनसं पछोड धएने छी। छौ पांच टुटबे ने करै है।

पुरुष १ : आब की टुटतौ ? कहि देने छियौ। तोरा नै होतौ। पहिने भागेसरके कहल जा चुकल छै। ओकरा होतै।

पुरुष ३ : ई त अन्याय होतै। दिन- राति खटै छी हम। चुनाव होइ कि पंचैती। गाममें चीत भरै छी हम आ डिलरशीप लेब बेरमें भागेसरके भेटतै ! की प्रधान जी ?

पुरुष २ : हम की कहियौ ? गोधिआ जे कहतौ सेहे होतै।

पुरुष ३ : त महाजन ! हमरा नहिए होतै।

पुरुष १ : तों बराबरि भोजके बेरमें कुम्हर रोपैत अएले ह। तोरा कहि देलियौ नै होतौ। मूड खराब नै कर। (पुरुष २ सं) चलु गोधिआ।

(दुनूक प्रस्थान)

पुरुष ३ : देखलही बौधु ! बडका सबके ताल।

बौधु : हम की देखियौ।

पुरुष ३ : केनाक हमरा निरैस देलक। अच्छा ठीक है। फेर अबै है चुनाव। हमरो नाम हरिश्चन्दर है।

अन्हार

दृश्य २

(बौधुक चाहक दोकान। भिनसरक समय। बाट ध गौआसभ अपन - अपन काज करैत जाइत। चाह बनबैत बौधु। एकटा सात- आठ वर्षक बच्चा एम्हर(ओम्हर क सहयोग करैत।)

बौधु : (बच्चासं) रे छोटे। देखही त चिनी हौ कि नै ?

छोटे : ठीक है।

बौधु : कनीक गिलास सबके नीक नांहित धोले।

(छौंडा गिलाससभके गरम पानीस बगलमे धोअ लगैत अछि। ताबत्

पुरुष ३क प्रवेश। बेंचपर बैसि जाइत अछि।) पुरुष ३ सं) की हौ हरिश्चन्दर आइ भोरे भोर केना दोकान पर ?

पुरुष ३ : त कह ने नै आब ला। नै अएबौ।

बोधु : (नेहोरा करैत) राम, राम ! गहिंकी त भगवान् होइ है। भोरक पहिलका गहिंकी त आओर लक्षनमान !

पुरुष ३ : अच्छा बौधु ! बनाले तोहू। जकर हाथ कमजोर होइ है, सब ओकरे पर लागल रहै है।

बौधु : छोड्डु भाइ। चाह बनबियौ ?

पुरुष ३ : ई बात तोरा शुरुएमे बुझ नै चाही ?

बौधु : तो हमर पहिलके गहिंकी छा, से......।

पुरुष ३ : हँ, हँ बुझलियौ। ई चाह उधारी नै रहतै।

(बौधु चाह छान लगैछ। ओहि बाटे जाइत पुरुष ४ के हाक पाड़ि बजा लैछ। पुरुष ३: हौ रामधन ! आबह, एक कप भ जाइ।

पुरुष ४ : हौ, हमरा जल्दी हबे। प्रधान निकलि जाएत।

पुरुष ३ : हौ बुझिलियौ। अखनु तोरै पर ढरल हौ परधान। जे जेना दूहि ला।

पुरुष ४ : (बेंच पर बैसैत) देखह हरिश्चन्दर। इहे त खुबी है अयोधी चौधरी में। "ने माधोके लेना ने उधोके देना।" तैस आइ भरि गाममें सब मानै है।

पुरुष ३ : (बौधुसं) एकटा चाह आरो बना दही। (पुरुष ४ सं) हं, तो सब कैला नै कहबहो। हमरा सबके लेल त....।

पुरुष ४ : नै, ई हमरे बात नै। आइ गाममें एक्कोटा मुद्दा- मामिला अदालतमे है ?

पूरुष ३ : से त नै है।

पुरुष ४ : गाममे शान्ति है, लोक अपन- अपन काम करैअ। ई शान्ति, प्रेम ककरा खातिर छै ? इहे अजोधीके खातिर की ने ?

पुरुष ३ : इहे तोहर गेंगिऐ रहै छह। हौ गाममें ओतेक विकास नहियों भेलै त ककरो हानियो त नहिए कैलकै। सबके समान दृष्टिस देखै है। की हौ बौधु ?

बौधु : (गिलास बढबैत) जी, अपने कहिते छिऐ त।

पुरुष ४ : देखिहो, अगिलो चुनावमे उहे होतै प्रधान।

पुरुष ३ : आब हद भ गेलो। हौ फेरु प्रधानके बात नै करह। गाम प्रधान होब बला स सुन्न नै भ गेल है।

पुरुष ४ : (कनेक रोषस) देखह बौधु ! ई केहन आगि लगब बला बात बजैअ। हौ के है अयोधीके विरोधमे टिक बला।

पुरुष ३ : (उठैत) देखह रामधन। समय आब दहक। देखबे करबहक की ! (दुनू कपक पाइ बौधुके दैत एक कात विदाह भ जाइछ। पुरुष ४ ओकरा जाइत एकटक देखैत रहैछ।)

पुरुष ४ : बौधु ! हम ई की सुनै छी। एकरा कल्ला नै अलगै छलै। से लगैए ई कोनो अन्हेर करत।

बोधु : भगवान् बचबथुन अइ गाम के।

अन्हार

दृश्य ३

बौधुक चाहक दोकान। अपरान्हक समय। छोटे आ ओकर माय दोकानपर। महिलाक उमेर ३५(३६ वर्षस उपर नहि। नीक देहयष्टि। बाट ध क पुरुष ३ जाइत। दोकान पर बौधुके नहि देखि दोकान दिश सहटि जाइत अछि। ओकरा देखि महिला घोघ कने तानि लैछ।

पुरुष ३ : (बेंचके कनेक अपना दिश घिचैत) की रे छोटे। बाप नै हौ ?

छोटे : बजार गेल है।

पुरुष ३ : कैला रै। ओकरा बुझल नै है गाममे बड़का पंचायत है। कय गामके पंच सब जुटतै चाह त खुबे विकेतौ।

छोटे : ताहीला त चाहपती, चिनी लाब गेल है। कनी खैनी, गुटका आ बिस्कुट सिकरेट सेहो लौतै।

पुरुष ३ : एह, तब त अपनो फैदे है। चाहके संग - संग बिस्कुट। (कनी बिलमि) हं, एकटा चाह बनाब कही मायके।

(महिला चाह बनब लगैछ। स्टोबमें हवा दैत काल बुझाइछै जेना तेल कम हो। छोटेके बजा क किछु कहै छै। छोटे डिब्बा आ पाइ ल क दोकान दिश जाइत अछि।)

(कनेक सहटि क) हे रघुनाथपुरीवाली। साउस मानै छह की ? कहादन राति बड झगड़ा कैलको। (महिला किछु ने बजैछ। गिलास धोअैत रहैछ।) नै, कुछो होअ त बाज। आइए पंचैतीमे राखि देबै। बौधु शुद्ध बुद्धु हओ। किछु ने बजतो।

महिला : (गर जांति) सब ठीके है।

पुरुष ३ : डरे कहै छह त निडर भु कह। हम ठाढ छियो किने। बुढियाके केस ध क पंचायतमें ल अएवै।

महिला : बस करथुन। हमर घरके बात है। हमही सब समेट लेबै।

पुरुष : ३ सेहे। हम सब कथीला छिऐ। मौका पड़तै त तोरा खातिर देखल जएतै।

महिला : (बेटा गेल बाट दिश ताकि) मोचरुवा, मरि गेलै कत्त ?

पुरुष ३ : कैला धीआपुताके गारि पढैत छहो। अबिते होतै की ? (कनेक विलमि) रघुनाथपुरवाली, हे कनीक सलाई दा त, बीड़ी धड़वै छी। (महिला संकोच स आगां बढैत अछि आ पुरुष ३ क हाथ में सलाई दैत छैक। पुरुष ३ सलाई ल क बीड़ी धरबैत अछि। आ सलाई दैत काल महिलाक हाथ दबा दैत छैक। महिला झटकि क हाथ अलग कै त अछि।)

महिला : (रोषसू) केकरो बहु- बेटीके एना नै करके चाही।

पुरुष ३ : गहिंकी संगे एना रोषस बातो ने करके चाही कीने।

महिला : मार बढनी एहन गहिंकी के। अबै है छोटे के बाप त हम कहै छिऐ।

पुरुष ३ : जा, जा, बौधुआ हमरा की क लेत। अड्डा- खाना हमही धांगी आ दोसरमे चौक परक सार्वजनिक जमीनमे ई दोकान। एक्के इशारा पर उठि जएतौ।

(महिला कनेक डेराइत अछि। ताबत् छाटे अबैछै। महिला तीन चारि चमेटा लगबै छै।)

महिला : जुअनढाहा, कत्त मरि गेल छलेह। जत जाएत खेलमें लागि जाएत।

छोटे : दोकान पर भीड़ रहै। हम अपने ल लितिऐ। दीतै तब ने अबितिऐ।

(स्टोबमें टीप लगा तेल ढारैछ। हबर - हबर हवा द चाह बनबैछ। एम्हर पुरुष ३ बीड़ी सोटैत रहैछ। ताबत् गा.वि.स.क पिएन रीझन मंडलक प्रवेश।)

रीझन : रघुनाथपुरवाली एक गिलास हमरो दा।

(आ दोसर बेंच पर बैसि जाइत अछि।)

पुरुष ३ : हं, हं रीझनाके बिस्कुटो दही रे छोटे। परधाने आ एकरे त चलती है। जगहके भाडामें चाह बिस्कुट। की रे रीझन ?

रीझन : देखू हरिश्चन्दर जी ! हम सब अपन टेंटके पाइस चाह पीबै छी। खैराती नै।

पुरुष ३ : तैयो, तोरा सबपर त रघुनाथपुरबाली मेहरबान छौहे। जतेक कचर।

(पुरुष ३ उठैत अछि आ एक दिश विदा भ जाइछ।)

रीझ्न : एह, केहन- केहन लोक है गाममें।

महिला : सेहे देखथुन। जे मनमे अबै है बजै है।

(चाह बनाक रीझनके दैत अछि।)

कहादुन बजै है, ई, जे आब दोसरके जीततै परधानमे। बाप रे, गामके भुजि देतै।

रीभन : (चुस्की लैत) रे, के कहैछौ रघुनाथपुरवाली ! जहिया तक परधान आ रामअसीस बाबू एक है, कोनो माइके लाल किछो नै क सकतै। (चाह समाप्त करैत अछि। पाइ दैत छैक आ ओत स विदा भ जाइत अछि। महिला आ छोटे चाहक सामग्री सभ ठीक कर लगैत अछि।)

अन्हार

दृश्य ४

(बौधुक चाहक दोकान। दोकानमें गुटका, खैनीसभ टांगल। टेबुल पर पाउरोटी। कठघरामे बिस्कुट, सिकरेट, बीड़ीसभ ताहिया क धएल।

भिनसर ८- ९ क अमल। किछु गोटे चाह पीबैत। ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश। एक नजरि दोकान पर दैत अछि। एक गोटेके बैसल देखि प्रसन्न भ ओम्हर सहटि जाइछ।

पुरष ३ : अरे रुपचन भाइ। तोरा त भरिगाम खोजि लेलियौ, एत्त छे।

रुपचन्द : बड़ी काल भेल। चाहो पीली, हम जाइ छी।

पुरुष ३ : नै अन्हेर नै कर नै। तोरास बतिआएके है।

(चारु भर चाकुआइत अछि। चाह पीब बला उठि क चलि जाइछ।)

हं, आब फैलस बतिआएब। बौधु, कनीक करगर दू कप बना।

(बौधु मूह बिजुका चाह बनब लगैछ।)

त भाइ हम सब आब गाममे नै रहु।

रुपचन्द : की भेलौ से ?

पुरुष ३ : रे खाधिके डिलरशीप लेब चाहली (प्रधान नै देलक। सडकमे माटि परला उपभोक्ता बनलै, तैमे नै रखलक। मासटरीमें एकगोटेक घुसिआब चाहलिऐ नै भेल। आब हम सब खेतके दुबही चिबाउ।

रुपचन्द : ई त ठीक छै भाइ। जहिआस रामअसीस आ अयोधी मिललैअ, हमरा तोरा सनके गुंजाइश गाममे नै हौ।

पुरुष ३: त हम हिम्मत हारि जाउ।

रुपचन्द : तोरा सन लोक हिम्मत केना हारत। लेकिन दूनू के.....।

पुरुष ४ : की दुनूके - दुनूके रटैछे। कोनो जोगाड त सोच पडतै।

(ताबत् बौधु चाह दुनू के हाथमे दैत छैक।)

रुपचन्द : दुनू राम- सुग्रीवके मित्रता है बौआ। टस स मस नै होतौ।

पुरुष ३ : (किछु सोचैत) बात त कठिन छै। मुदा कलयुगमे राम- सुग्रीवके दोस्ती कतेक दिन ?

रुपचन्द : (साश्चर्य) माने ?

पुरुष ३ : माने साफ हौ। दुनूके बीच फूट आन पडतौ। गंगा- जमुना अलग होतौ तबही काम बनतौ। की बौधु ?

बौधु : (रोषसं) एह, हमरा कोनो मतलब हय। अहासब बड़कालोक बड़का बात।

पुरुष ३ : ई जमीन जे खैरातमे पौने छे, सांच बजिते छीन लेतौ ने।

बौधु : हमरा सबके बीचमे नै पारु, जे कर के हो अपन करु। हम किछु कहै छी !

रुपचन्द : किछु कहबे त जएबो करबे की ? खिआल रखिहे (पुरुष ३ स) त भाइ, की पलान हौ।

पुरुष ३ : अगिला चुनावमे सोच पड़तौ।

(ताबत् रामअसीसक प्रवेश। ओकरा देखि दुनू कनेक सकपकाइत अछि। फेर ठीकस बैसि जाइछ। बौधु भित्तर स खुरसी निकालि बाहरमे लगा दैत छैक।)

बोधु : बैठल जाओ मालिक।

पुरष ३ : आ रुपचन्द : (एक्केसंग) परनाम मालिक।

पुरुष १ : परनाम ! की बात है हरिश्चन्दर। आइ बैठार जमल है।

पुरुष ३ : जी ओहिना। अहींके बारेमें सोचै छी हम सब।

पुरुष १ : तोरो सबके नीक बात फुराइ हौ ?

पुरुष ३ : एह, मालिक, हमसव एतेक त अबूझ नै ने छी।

रुपचन्दके इशारा करैछ। रुपचन्द जेबी स खैनी आ चून बहार क लगब लगैछ। ओम्हर बौधु चाह बना पुरुष १ के बढा दैत छैक।)

पुरुष १ : की सोचै छले ?

पुरुष ३ : इहे जे अइबेर अहीके परधानमे खडा होब के चाही।

पुरुष १ : (रोषस) गलत बात छै। गोधिआं छैहे त हमरा बारेमे ई केना सोचि लेलही ?

रुपचन्द : अजोधीबाबू दू बेर त भेबे कैलखिन्ह। अइबेर अपनेके द देथिन्ह त कोन अपराध भ जएतै।

पुरुष ३ : आ अपन पराय के चिन्हुके मौका भेटै है।

पुरुष १ : नै, ई नै भ सकै है। गोधिआं नीक जका चलबै है। आ रायो सल्लाह त हमरे लै छै।

पुरुष ३ : आ भोटो त अहीके जाइहै किने ! कतेक है अयोधीबाबूके। १५(२० घर, सय डेढ सय भोट। हजार भोटस जितै है। के देहै भोट ?

रुपचन्द : आ पाचलाखके जे रुपैआ अबैहै , तैस अपन सहयोगीके पाल के

मौको त भेटै है ।

पुरुष १ : रुपैया त गामेके विकासमे जाइहै ने ।

पुरुष ३ : लेकिन पाइ जाइ है अपन आदमीके हाथे । अजोधीबाबूके भाइ, भतिजा, सार बनल है ठिकदार, ओहे उपभोक्तामे ओहे इसकुलमे, ओहे बोरिंगमे आ ओहे चाउर बाटमे ।

रुपचन्द : है एक्कोटा खांटी अपनेके आदमी ?

पुरुष १ : ओहो त हमरे आदमी है किने ।

पुरुष ३ : इहे भलमनसाहतके त फैदा उठौने है अजोधीबाबू । काम अपन आ नाम अहांके ।

पुरुष १ : देख, ई फुटानीबला बात नै बाज । उ जे करै ठीके करै है ।

पुरुष ३ : त बिलटाओल जाए अपन बाल-बच्चाके । अपन सहयोगी सबके । कैला हमहू सब सोचब ककरो लेल (रुपचन्दसं) चल रुपचन्द ! अइ गामके यहे रीति है । जकरा लेल कनैछी तकरा आखिमे लोरे ने । (दुनू उठैत अछि । ओम्हर बौधुक मूह बनैत(बिगडैत छैक । मोनमें जेना कोनो बात औंना रहल होइ, बाज नै चाहैअ । पुरुष १ सेहो उठैत अछि । जेबीसं पाइ निकालि बौधुके दैत छैक आ गुम्मसुम्म चल जाइत अछि । ओकरा जाइते पुरुष ३ आ रुपचन्द जोर स ठहाका मारैत अछि ।)

अन्हार

दृश्य ५

(बौधुक चाहक दोकान । अपरान्ह ३-४ क समय । गा.वि.स. अध्यक्ष पुरुष २ क प्रवेश । बौधु हरबरा क खुरसी बहार करैछ । कान्ह पर धयल गामछासं ओकरा पोछैत छैक आ कनेक आगू बढि अध्यक्षके बैसबाक इशारा करैछ । प्रमुख बैसैत छथि । बौधु स्टोबमे हवा भरैत अछि । केतली चढा दैत छैक । छोटेके गिलास साफ करबाक लेल कहैत छैक ।)

पुरुष २ : बौधु, केहन चलै छौ दोकान ?

बोधु : पेट भरैछी मालिक ।

पुरुष २ : आइ तोरो दोकानके चर्चा उठल रहौ पंचैतीमे ।

बोधु : (हाथ बारैत) जी ?

पुरुष २ : हं, एक गोटे उठौने रहौ (ई जमीन तोरा किए देल गेल छौ से । (बौधु चुप्प रहैत अछि, चाह बनब लगैछ ।) सार कतेक कपटी लोक भ गेलै आइकाल्हि ।

बोधु : अपनेक आशामे छिऐ ने मालिक ।

पुरुष २ : रे जा धरि हम छी, के छुतौ तोरा । देख लेबै हम । खाली आइ कनीक गोधिआ नै रहै ।

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश ।)

पुरुष ३ : (पुरुष २ सँ) परनाम मालिक !

पुरुष २ : की रे, आइ ककरा माथ हाथ देलही ।

पूरुष ३ : जी केकरा देबै । (कनेक बिलमि) आइ त मुनरा साफ बँचि गेल मालिक ।

पुरुष २ : सेहे त । तोरे सबके चलती भ गेलौ ।

पुरुष ३ : जी ?

पुरुष २ : जेना ओ पबितराके पुतहुके हाथ-पात कैलकै हम एतेक सस्ता नै पट दितिऐ ।

(पुरुष ३ मात्र माथ डोलबैत अछि ।)

कह त चौरी-चांचर भरि गामके बौह-बेटी खेत-पथार जाइ है । एना हात-पात करतै ।

पुरुष ३ : तैयो त....।

पुरुष २ : सेहे त कहलियौ, बँचि गेलौ । गोधिआ नै आयल रहे तैस । (ताबत् चाह हाथमें दैछ बौधु ।)

पुरुष ३ : (चारुभर चकुआइत) मालिक आब गोधिआ अएबो ने करत ।

पुरुष २ : (हाथ रोकि) की माने ?

पुरुष ३ : मुनराके माथ पर ककर हाथ छै बूझल हय ?

पुरुष २ : (किछु ने बुझल सन) रे तों एना हर फेर कैला करै छे । साफ बता ने ।

पुरुष ३ : मालिक, रामअसीस बाबू सेहो अगिला चुनावमे खडा होत । से आब ओ आदमी बनब लागल है ।

(पुरुष २, एक्के बेर चिहुकि क ठाढ भ जाइछ । पुरुष ३ दिश एना क देख लगैछ जेना ओकरा कांचे चिबा जाएत । पुरुष ३ सकपका जाइत अछि । फेर पुरुष २, आगा बढ लगैछ ।)

बौधु : (हाथ जोडैत) मालिक, थीर भ क बैसल जाओ ने । सब ठीक भ जएतै ।

पुरुष ३ : बैसियौ मालिक । जे सांच बात रहे से कहि देली ।

(पुरुष ३ जाए लगैत अछि ।)

पुरुष २ : (पुनः खुरसी पर बैसैत) रे हरिश्चन्दर ! रे ई की बजले ?

पुरुष ३ : आंखि बइठे मालिक । रामअसीस मालिक आदमी बनबमे लागि गेल है । गाममे एक कान दू कान भ गेल है ।

पुरुष २ : हम छिऐ त ओहे है किने।
पुरुष ३ : ई त अहा बुझै छिऐ ने। ओहो बुझे तब ने।
पुरुष २ : उ नै बुझ्झतै त हमरा लेल राति दिन एक क दितै ?
पुरुष ३ : भ सकैअ बुझने होय जे हमरे बले जितैअ गोधिआ त हमहीं कैला नै.....।
पुरुष २ : नै तो फोर चाहै छे। ई नै भ सकैछै।
पुरुष ३ : हम त देखलिऐ राति खतवे टोलमे घुमैत। हुनका दरबज्जा पर लोकके अबरजाही सेहो बैढ गेल है।
(पुरुष ३ गुम्म अछि। किछु सोचबाक मुद्रामे देखल जाइछ। ताबत् रुपचन्दक प्रवेश।)
हे देखियौ, रुपचन्द सेहो आबि गेल। की रे रामअसीस मालिकके कोनो खबरि ?
रुपचन्द : मालिक ! हम त अखनु अपना आंखिसं गछुलीमें मुनराके रामअसीस मालिकस कनफुसकी करैत देखलिऐ अ।
(पुरुष २ उद्विग्नतास छटपटाइछ, टहलब बन्द नै होइछ। ताबत् बौधु एकटा चाह ल क फेर पुरुष २ के दैत छैक।)
बौधु : (चाह बढबैत) मालिक, शांत भेल जाओ। लेल जाओ चाह।
(पुरुष २ गुम्हरिक बौधु पर तकैत अछि। आ छोटे चाह ल क घूरि जाइछ। पुरुष २ तेजीस प्रस्थान क जाइछ।)
पुरुष ३ : रुपचन्द। आइ बौधुके चाहस जी नै भरतै। चल भठी दिश।
(दुनूके हंसैत प्रस्थान। बौधु माथपर हाथ ध ठामहि टूलपर बैसि जाइछ।)

अन्हार

दृश्य-६

(बौधुक दोकान। ७-८ बजे भिनसरक समय। बौधु चाहक दोकानके सरिअबैत। ताबत् पुरुष ४ क प्रवेश।)
पुरुष ४ : बौधु, आब अइ गाममे रहब मुश्किल भ गेलौ।
(बौधु हाथ रोकि जिज्ञासासं देख लगैछ।)
जे कहियो नई सुनने रहिऐ से बात सब होब लागल है।
बौधु : की भेलै काका।
पुरुष ४ : की होतै रे। अधकारी टोल आ चौधरी टोलमे कराम कराम भ रहल है।
(बौधुके मूह खुजले के खुजले रहि जाइछ।)

अनर्थ भ जएतै बौधु।
बोधु : रामअसीस मालिक आ अयोधी मालिक कत है ?
पुरुष ४ : सेहे त लोकके अचरज लगै है। अपन(अपन टोलके सम्हार बला सब कत है ?
बौधु : माने दुनू गोधिआं नै है ?
पुरुष ४ : रे रहौ कि नै रहौ। बिना दुनूके जानकारीके ई होतै ?
बौधु : आखिर आगि लगाइए देलकै चण्डलवा सभ।
पुरुष ४ : के लगा देलकै रे !
बौधु : (जेना सम्हरि गेल हो) नै आखिर कोइ त दुनू भर लगौने-बझौने होतै किने।
पुरुष ४ : से हे। अन्हेर भ गेलै आब। गाममे बेट-पुतहु सुरक्षित नै रहत। खेत पथार लुटि लेतै दिन देखारे। दुनूके फोरनिहार सेहे चाहैत होत।
(बौधुसँ) ला, एकटा चाह।
(बौधु चाह छान लगैछ। मुदा ओकर ध्यान कतौ दूर छै। चाह टेबुल पर छिडिआए लगैछ। ई देखि ओकर वेटा छोटे टोकि दैछ।)
छोटे : बाउ हौ ! चाह हेराइ छो।
बौधु : (चेहाक) अएं ! (फेर सम्हरि क चाह छानि पुरुष ४ के दैछ।) आब हमरा सब सनके के देखतै ?
(आ लद द स्टूल पर बैसि जाइछ। गुम्म सुम्म। जाधरि पुरुष ४ चाह पीबैछ ओ एक शब्द नै बजैछ। अनुहारक व्यथास ओकर पिड़ाके बूझल जा सकैछ। ओकर बेटा छोटे, बापक रुप देखि सकदम्म भेल एक कात बैसल अछि। पुरुष ४ चाह पीबि गिलास नीचा ध दैछ। आ जेबीसं पाई निकालि बौधुके दैछ। बौधु यंत्रमानव जका पाइ ल टिनहा बक्सामे ध पुनः यंत्रस्थ भ जाइछ।)
बौधु : (कनेक कालक बाद) रे छोटे।
छोटे : जी !
बौधु : समट सभ। आइ दोकान बन्द रहतै।
(छोटे किछु नहि बुझि कनेक काल जेना अकबक ठाढ रहैछ।)
सुनलही नै, दोकान बन्द रहतै। धर गिलास सभ।
(आ अपनो स्टोबके बन्द क दैछ। ताबत् महिला हाथमें डेकची भरि दूध लेने अबैछै। दोकानक अवस्था देखि ओ ठामहि डेकची ल ठाढ भ जाइछ।)
महिला : (कनेक काल स्थिति गमि) रे छोटे, की भेलौ रे ? (छोटे किछु ने बजैछ।) मर, एना कैला कैने है। सब चिज बुझाएल है।

बौधु : (गंभीर होइत) आइ दोकान ने खुजतै, दूध लेने जाओ घरे।
महिला : (दूधके कठघरामे रखैत) से कथीला ! की भेलैअ ? कोई कुछो कहलकैअ की ?
बौधु : नै, हमरा कोइ कुछो नै कहलक। ओहिना, आइ नै काम कर के मन होइअ।
महिला : मर, धीयापुता की खएतै ?
बौधु : एकदिन ने कमएने धीयापुता मरि नै जएतै।
महिला : दुत् मरो दुश्मनके धीयापुता। भोरे भोर एना कैला बजै है ?
बौधु : देख रघुनाथपुरवाली। आब हमरा सबके रोजी रोटी एत्त नै चलतौ।
महिला : अए, कैला ?
बौधु : सुनलही नै, चौधरी टोल आ अधकारी टोलमे मारि बजर बला है।
महिला : गे दाई गे दाई ! मुंहफौंसा आगि लगाइए देलक।
बौधु : से हे त मुख बात है रघुनाथपुरबाली। हम जनै छिऐ, लेकिन नै बाजि सकै छिऐ।
(महिला आश्चर्यस पति दिश तकैछ।)
हं, छोटेके माए, हम जनै छिऐ अइ आगि लगब बलाके। पेटके खातिर चुप छी।
महिला : पेटस अइ बातके की मतलब ?
बौधु : मतलब है, खुब मतलब है। देखौ, अइअ सब किसिमके लोक अबै है। रंग-बिरंगके बात बजै है। आ हम पेटके खातिर सब बातके घोटने रहै छी।
(महिला चुप अछि। गौरस सुनैत रहैत अछि।)
दोकान सार्वजनिक होइ है। कोनो बात बाजि दू त कोइ नै आएत। कहत बात आउट करैअ। इहे कहौ की की करु हम।
(बौधुके छटपटाहट देखि पत्नी सेहो विचलित भ जाइछ।)
महिला : यदि एकरा किछु बजने दुनू टोलमे मारि पीट रोकल जा सकै है। त आब चुप नइ रहौक।
बौधु : माने, एकर बिचार है बाल(बच्चाके विलटा दू। पेट पर लात मारि दू।
महिला :जै गाछक जरिएमे घून लागल जाइत हो, तकर फलके आशा क क की ?
बौधु : माने ?
महिला : जे अजोधी मालिक पर सान रहै, तकरे पर ई सब वार है त आब पेट पर ओहुना लात लगबे करतै।
(बौधु उठि क टहल लगैछ।)

हम त कहै छिऐ, बात सल्ट बला है त नइ चुकौ।
बौधु : (विश्वासपूर्वक) ठीक छै। देखल जएतै।

अन्हार

दृश्य ७

(बौधुक चाहक दोकान। दोकान पर महिला आ छोटे। सभ चिज यथावत्। पुरुष ४ क प्रवेश।)
पुरुष ४ : (बौधुके हल्ला करैत) बौधु, रे बौधु !
(महिला छोटेके इशारा करैछ।)
छोटे : नै है बाउ !
पुरुष ४ : (लग जा) कत्त गेलौ ?
छोटे : बड़का मालिक ओत्त !
पुरुष ४ : बापरे, ई छौंडा आगिमें पाक कैला गेलैअ। कनिआ नै रोकलहो ?
महिला : ई नै जइते त आरो अन्हेर भ जइतै कका।
पुरुष ४ : (आश्चर्यस) की बात रहै से ?
महिला : दुनू मालिकके बीचमे आगि लगब बलाके नाम कह गेलैअ।
पुरुष ४ : त सब छार-भार एकरे पर पड़तै।
महिला : गामके इज्जत आ सुख-शान्तिस उपर हमरा सबके सुख नै है कका। गामे नइ रहत त हमसब कत्त रहब !
(हिचुक लगैछ।)
पुरुष ४ : (आंखि भरि जाइछ) तों किए कनै छह। जै गाममे बौधुसन बेटा आ तोरा सन पुतहु रहतै, गामके किछो नै होतै। आब हमरो विश्वास भ गेल।
(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश। ठोढ पर कुटिल मुस्कान। ओकरा देखि महिला मूह बिजुका लैछ।)
पुरुष ३ : (अपनेस एकटा बेंचके ससारि बैसैत) की हो गेनाई ! टोलमे आगि लागल छौ आ तू एम्हर मजा लैछा।
(पुरुष ४ दांत पीसि क रहि जाइत अछि।)
जैबा, छोडएबहो झगडा। प्रधानके हनुमान छहो तो सब की ने !
पुरुष ४ : रे रावणो बेसी दिन नै बांचि सकल।
पुरुष ३ : तकरा लेल रामोके जनम पड़तै किने हो (ठठा क हंसि दैछ)। बेचारा गोधिआं (छोटेस) ला रे छोटे, एक कडक चाह।
पुरुष ४ : हंसिले, कहिओ तोरो सबपर जमाना हसतौ।
पुरुष ३ : ई जमाना हंस लाइक रहतै तखन ने हंसत हो। (फेर ठहाका)

(ताबत् हाहायल-फुहायल रुपचन्दक प्रवेश ।)

रुपचन्द : भाइ, तोरे तकैत अबै छियौ । गजब भ गेलौ ।

पुरुष ३ : की भेलौ ?

रुपचन्द : बात उनटि गेलै । दुनू गोधिआके हमरा सबके चालि बुझ में आबि गेलै । झगडा शान्त भ गेल है । आ लोक सभ तोरा-हमरा तकैत एम्हरे आबि रहल हौ ।

(पुरुष ३ नर्भस भ जाइछ । उठि क ठाढ भ जाइछ । अनुहार पर डर पसरल देखल जा सकैछ । कनेक काल अकमकाइत अछि, फेर एक दिश भाग लगैछ ।)

महिला : चाह नै पीथिन ?

(दुनू भागि जाइछ । पुरुष ४ क हँसी ।)

अन्हारक संग एकटा अन्तराल ।पृष्ठभूमिमे मार सारके, वा जाइ हौ, पकड ! खल्ला घीचले !अगिलेसबा सभ ! बाजत दिन भरि झूठ, नाम हरिशचन्दर !(पुनः मंच पर प्रकाश ! दृश्य पूर्ववत् । पुरुष ४ बैसल । चाहक चुस्की लैत । महिला, छोटेक अनुहार पर प्रसन्नता । ताबत् एक कातस रामअसीस आ बौधु अबैछ । बौधु पुरुष ३ के पकडने रहैछ । दोसर दिशस अजोधी आ गोराइत अबैछ । गोराइत रुपचन्दके पकडने रहैछ । दुनू गोटे मंचक बीचमे आबि दोकानक बगलमे ठोंठ पकडि दुनू के धकेलि दैछ ।)

बौधु : बोल सार ! ई खेल के कयने रहे !

पुरुष ३ : हम, हमहीं गाम भार चाहै छली । दुनूके फोड़ चाहै छली । हमरा माफी देल जाओ प्रधानजी ! गलती भ गेल ।

गोराइत : आ तोरा की होतौ रुपचन !

रुपचन्द : दुहाइ माइ-बाप ! बचाओल जाए ।

पुरुष २ : गोधिआं, आइ दण्डक निर्धारण अहां करबै । कहु की दण्ड देल जाए एहि दुनू चण्डालके ?

पुरुष १ : नै गोधिआं, वास्तवमे दण्ड देबाक अधिकारी आइ बौधु हय । जं बौधु आइ अपन मुह नै खोलैत त गाममे अन्हेर भ जइतै ।

पुरुष २ : बौधु !

बौधु : मालिक ।

पुरुष २ : बाज ! एहि सार सबके की कएल जाए ?

बौधु : छोट मूह नमहर बात । हम त अनकर ऐंठ धो क गुजर कर बला लोक छी मालिक । दण्ड देवके आंट कत्त स करबै ।

पुरुष १ : लेकिन प्रधान कहै छी । बल्कि सौंसे गाम तोरा संग छौ बौधु । बाज

निडर भ क ।

(बौधु गुम्म अछि । जेना किछु सोचि रहल हो । कनेक कालक बाद कल जोड़ि पुरुष २ क आगा ठाढ भ जाइछ ।)

बौधु : मालिक, जदि हमरा सन लोकके अपने सब एतेक इज्जत देलियैअ त हमर दूटा बात मानि लेल जाओ ।

पुरुष २ : बाज ने , की कह चाहै छे ?

बौधु : सरकार ! एहि दुनू पापी के माफ क दिऔ !

पुरुष १ आ पुरुष २ : (दुनू एक्केबेर) माफ !

बौधु : हं, मालिक । आ दुनूके समितिके काममे सेहो लगा दियौ । पेट भरल रहतै त मनो स्वछ रहतै। इहो एकरा सबके दण्डे है।

(पुरुष ३ आ रुपचन्द आश्चर्यस भरल आंखिए बौधुके देखैत अछि ।)

पुरुष २ : (आंखि डबडबा जाइछ) बौधु, हमरा सबके ई गर्व नै होबाक चाही जे तोहू अही गामक सन्तान छे !

बौधु : (भरल आंखिए) मालिक ई त अपने बडका लोकक बडप्पन है । हम त चरणके धूल छिऐ सरकार ।

(सभक आंखिमें प्रेम आ प्रसन्नताक नोर भरल छैक ।)

अन्हार/पटाक्षेप

◆◆

सूली पर इजोत

मंचपर अन्हार । प्रकाशक घेरा मंचपर प्रवेश करैत एकटा अधवयसू पर पड़ैत अछि । पएजामा, कुर्ता, कांखतर झोडा लटकल । मुदा चिंतित सन । पृष्टभूमिमे संगीतक ध्वनि मंचक बीचमे अबैत । ओ अधवयसू ठमकि जाइत अछि । किछु गुनधुन करैत लगैत अछि । मुदा एना जे किछु सोचि रहल हो आ तकरा माथ झटकि खारिज कए दैत हो । कनेक काल ई कम चलैत रहैत अछि । अधवयसू मंचक आगू भाग दिश ससरि जाइछ । हाओभाव एना जे ओ किछु बाजय चाहैत हो, लोकके किछु सुनबय चाहैत हो ।

अधवयसू : (दर्शक दीर्घा दिस देखि) बड़ बौआएलहू रने-बने । कहां भेटल जीवन हमरा । कहांदन जीवन कुरुप होइछ, पाखण्ड होइछ, धोखा होइछ । ठकैत अछि लोक, जं सएह त किए मारिकाटि, युद्ध-सन्धि, छीना झपटी ! कहु किए ई छीना झपटी ? जीबाक लेल ने ! (स्वर तेज भए जाइछ)

पृष्टभूमिमे एकटा आवाज (अहां बाजी, भूकी अथवा चिचिआ कए संसार माथ पर उठाली कोनो फर्क नै पडतै, अहां इन्कलाब

लाबि नहि सकैछी ।
अधवयसू : (चौकि) के अछि ? ककर हिम्मत भेलैए जे हमर पुरुषार्थके ललकारैत अछि ।
ओएह अवाज (गति वैह हैत जे भेल रहै कहियो
जीविते सूलीपर चढा देल गेल कोनो ईशाके !
मनुक्खके मनुक्खेटा भ क‌ रहबाक हेतु
कहब, अपराध भ गेल अछि ।
तें हम विश्वस्त छी -
अहा कोनो तरहक बदलाओ लाबि नहि सकैछी ?
अधवयसू : (विचलित होइत) प्रश्न उठैछ - तखन जड़तामे जीवाक अर्थ कोन ?
स्वर पूर्ववत् - जिनगीक तेहने शब्दक अर्थ देबाक परिणति थिक
इन्कलाब (एकटा बदलाओ, एकटा नव बाटक अनुसन्धान ।
मुदा सामाजिक जड़ताके तोड़बाक हेतु बढ़ैत
किछु जोड़ा पैरक धमधमाहटि
कानमे तूर ठूसि मस्त निम्नमे सूतल
किंवा आराम करैत एहि युगके
कोनो असरि नहि पहुचा सकैछै ।
अधवयसू : हम मानैत छी - कोनो नवीनताक पहिल किरिनके
जाड़ मासक भोर जका
छाती स सटौने गर्माहटक अनुभूतिक
अपन फूट आनन्द होइछ,
आ तएं मुट्ठीभरि किरिनक धाहीक बलपर
गर्म दिनक कल्पना सोनितमे
प्रवाह अनैत छैक
आ इन्कलाबक नारा कोनो नव कान्तिके
सूत्र-पातक हेतु पृष्टभूमि बनि कए ठाढ भए जाइछ ।
पृष्टभूमि स्वर - बरु इएह सूत्रपात करबाक सूत्र
अहांक चिचिऔनीके अर्थ दैत अछि
अहांक मनुष्यताक रक्षा करैत अछि ।
नहि त कनेक सोचिऔ ?
हरि सकबै गाममे जुआन बेटीक पीड़ा भोगैत
कोनो बापक दर्द ?
घरखर्चीक जोगाड़मे घरवालीक सौदा करैत पतिक मजवूरी ?

सत्य त ई थिक बन्धु !
बेनग्न समाजक किरदानी
मान्यता प्राप्त कए चुकल अछि
बालात्कार, हत्या किंवा चोरी डकैती
संस्थागत भए गेल अछि ।
तखन अहा ककरा लेल चिचिआएब ?
जाति, धर्म, भाषा, भेषक नामपर
खण्ड, खण्ड भए अपन सतीत्वक सौदा करैत
कोनो नगर कन्याक हेतु,
से ककरा पक्षमे अवाज उठएबाक अछि ?
भ्रष्टाचार, घूस, अत्याचार किंवा
मानव अधिकारक खुलेआम होइत उल्लंघन हेतु ?
वेरोजगारी, सोर्स अथवा घर बैसल
दरमाहा उठएबामे चसकल हाकिम सभक हेतु ?
ककरा हेतु ?
की अहाके लगैए-सूली चढि मसीहा बनि जाइ ।
नहि बन्धु नहि !
अहांके सूलीपर चढ़ा आत्महत्या प्रमाणित कए देल जाएत !
अधवयसू : तखन ?
पृष्टभूमिक स्वर- मुट्ठी भरि किरिनक बलपर
विराट अन्हारस लडबाक हेतु
अनुगुंजित अहंक इन्कलाबक नारा
अन्हारमे भेतिआ कए दम तोडि देत !
आ ओ मुट्ठीभरि किरिन बेताल जकां
सूली पर जा टंगा जाएत ।
आइ जरुरी छै ओहन इन्कलाबक
जे सूली पर टांगल मुट्ठीभरि इजोतके उतारि
सगरो संसारमे छिड़िआ दैक,
खूजि जाइक लोकक आंखि
देखि सकैक अन्हारमे ताण्डव नाच करैत अपन छायाके
बूझि सकैक जिनगीक अर्थ
छुटिआ सकै,-मनुष्यता आ नृशंसताक भेद ।
अधवयसू : हम लाएब जिनगीके । हम जरुर लाएब !

पृष्टभूमिक स्वर - तें एखन मात्र आंखि चाही
आ चाही हिम्मत आ विश्वास
लोकमे जिनगी बांटि सकबाक ऊहि
आ तकरा लेल उतारय पड़त
सूली पर टांगल इजोतके ।

पृष्टभूमिमे "उतार पडत सूली पर टांगल इजोतके" बेर-बेर प्रतिध्वनि होइछ । संगीतक झंकार बढ़ैत चल जाइछ आ एकाएक बन्द भए जाइछ । संगीत बन्न होइते मंचपर इजोत पसरि जाइछ ।

अधवयसू : हं, हम लाएब ग इजोतके । जे जीवन एतेक
सुन्दर आ आकर्षक हो तकरा पएबाले किछु
कएल जा सकैछ । हम लाएब, जरुर लाएब !

(अधवयसू जखन चलए लगैछ । मंचपर फेर स अन्हार होबय लगैत छैक । संगीत फेर सं शुरु होइछ, मुदा डेराओन । अधवयसूक डेग ठमकि जाइछ । प्रकाशक गोल घेरामे ओकर चेहरा पर वेचेनी स्पष्ट देखि पड़ैछ ।)

अधवयसू : (आश्चर्यसं) अएं, आब की भेल ?

एकटा प्रकाशक घेरा दोसर कोनमे पड़ैत छैक । एकटा मुखौटाधारी ठाढ़ अछि । पैघ-पैघ आंखि, लपलपाइत जीह । विभत्स पहिरन । अधवयसू एकटक ओमहर भय आ जिज्ञाशास देखैत अछि । हिम्मत कए ओकरा पूछैत छैक (रे, तो के छू ?

मुखौटाक मुद्रा आर भयानक भए जाइछ ।

ुबाज ने, के छें तों ? हमरा जल्दी अछि आ तों बाट छेकि ठाढ़ भ गेलें । की छौ तोरा मन मे ?

मुखौटाबाला बजैत अछि - हम जीवन छी ।

अधवयसू : कत्तक जीवन, घर कत्त छौ आ एत्त राकस जकां आगामे ठाढ़ किए छें ?

मुखौटावला : कत्तक जीवन, हम सभक जीवन छी । जीबैत लोकक जिनगी !

अधवयसू : (एक बेर रुप रंग निहारैत) माने.....।

मुखौटावला : (बातके लोकैत) हं, हमही छी तों, तों सभ । सभक आत्मामे वास कएनिहार जीवन छी हम ।

(अधवयसू गुम्म भए जाइछ । ओकर मुख मुद्रा एना भए रहल छै जेना ओकरा मुखौटाक बात पर विश्वास नहि भए रहल हो ।)

हमरा बूझल अछि(तों गुनधुन कए रहल छें । हम जे कहैत छी ओ सांच थिक अथवा मिथ्या । रे बूड़िबक हम यथार्थ छी, सत्य छी(इएह रुप छै जीवनक ।

अधवयसू : नहि, ई नहि भ सकैछ । एहन विद्रूप रुप जीवनक नहि भ सकैछ ।

मुखौटाबला : त, भाए, खोजैत रह-सुहनगर आ ललितगर जीवन । कहिओ ने भेटतौ ।

अधवयसू : हमरा नहि ठक । तो कोनो मायावी लगैत छे । हमर उद्देश्कें छेकबाक हेतु भ्रम सृजन कए रहल छें । हमर यात्राकें भंग करए चाहैत छें ।

मुखौटाबाला : (जोरसं ठहक्का मारैत) जो, तों सभदिन
बुड़िबके रहि गेलें । तए ने आइधरि कतौ तोरा
ठौर नहि भेटलौ । तों सहज, सुन्दर आ आकर्षक
जीवनक खोजमे रहलें आ स्वयंकें बेर-बेर मारेत रहलें ।
जो, फेरसू मर ।

अधवयसू : जो, जो बुझलियौ । जए बेर हम जिनगीक लग पहूचैत छी, एहिना भोतिअएबाक प्रयास कएल जाइछ । हमरा मोनपर जे छाप पड़ल अछि, तो हटा नहि सकै छे , किन्नहु नहि ।

अधबयसू दूनू हाथ कानपर राखि आंखि मूनि चिचिआ उठैछ- किन्नहु नहि । ताबत प्रकाशक गोल घेरा गायब भए जाइछ । आ पूर्ण प्रकाश मंच पर छिड़िआ जाइछ । मंचपर मात्र अधवयसू अपनाके पबैत अछि(एसकर ।

अधवयसू : (दीर्घ सांस लैत) ओह, कोना क भरमा देने छल मुखौटा । जीवन कतौ एतेक विद्रूप होइक । देह सीहरा देने छल चण्डलबा । जे देखल,

सरिपहू विकृत छल, विखण्डन छल, भ्रमजाल छल । जीवन त जीबाक लालसा उत्पन्न करैछ । ओकरा ताकय त पड़त । से कत्त ताकल जाए-कोम्हर अछि हमर जिनगी-हमर इजोत !

मंचपर एकटा ४०-४५ वर्षक स्वेतवस्त्रधारी युवकक प्रवेश होइछ । हाथमे दीप लेने । पहिरन स्वेत धोती, स्वेत कुर्ता आ स्वेत चादर । अधवयसूके कनेक विचित्र सन लगैत छै ओ व्यक्ति । पृष्टभूमिमे संगीतक शांत रसस पूर्ण ध्वनि आबि रहल छैक ।

अधवयसू : (आगां बढि) श्रीमान् अपने कत्तसं आबि रहल छी ?

पुरुष (१ : हम मृत्यु भुवनस बाहरक लोक नहि छी ।

अधवयसू : (ओकर उत्तरस कनेक खौंझाइत) से तू हमहू
देखिए रहल छी । मुदा कोनो ठेकान त हैत ने !

पुरुष (१ : किएने, खूब अछि । हम आत्मा छी ।

अधवयसू : (फेरस आश्चर्य चकित होइत) आत्मा ?

पुरुष (१ : हं यौ, हम आत्मा छी ।
अधवयसू : तखन ई दीप बारि की ताकि रहल छी ?
पुरुष (१ : इजोत !
संगीतक एकटा झंकार । अधवयसू हतप्रभ सन भए जाइछ । अवाक् मुहबौने ।
अहां, एना आश्चर्यमे किए पड़ि गेलहु । की हमरा बात पर विश्वास नहि भेल अछि ?
अधवयसू : (समहरि) नहि, से बात नहि छैक । हम एहि लेल सोचमे पडि गेलहू । अहू के इजोते चाही !
पुरुष (१ : हं यौ । देखू ने कत्त ने कत्त हेरा गेल अछि । हम तकरे खोजमे वर्षहुस भटकि रहल छी ।
(कनेक चुप्पी) आ अहां ?
अधवयसू : हमहु तकरे खोजमे छी ।
आब चौंकबाक वारी पुरष(पहिलक छलैक
पुरुष (१ : अहू कें ?
अधवयसू : हं, हम कैक वर्ष स जीवन खोजि रहल छी । हमरा नहि बूझल छल जीवन आ इजोत एक्के वस्तु छैक । तें कनेक बेसी भटकय पडल अछि ।
पुरुष (१ : त की आब बूझि गेलिऐ जीवन कत्त अछि, से ?
अधवयसू : हं, जखन ई बूझि गेलहू जे इजोते जीवन छै त इहो बात आब फरिछा गेल अछि ।
पुरुष (१ : की फरिछा गेल ?
अधवयसू : (दर्शनिक मुद्रामे) इजोत सूली पर टंगायल छैक ।
पुरुष (१ : सूली पर
अधवयसू : हूं सूली पर
पुरुष १ : सूली कत्त छै ?
अधवयसू : सएह ने बूझल अछि ।
पुरुष (१ : तखन, एतेक बुझियो क बेकार भ गेल ने !
अधवयसू : नहि बेकार किए हैत। जा धरि इजोत नहि, ता धरि धुकधुकी नहि । ओकरा खोजय त पडतै ।
पुरुष (१ : कत्त खोजब ?
अधवयसू : चाहे जत्त खोजय पडैक । हं, बरु ताबत स्थिर स सोची । थाकिओ गेल छी । आऊ अइ चबूतरा पर कनेक बैसल जाए ।

दुनू गोटे सहटि गाछतरक चबूतरापर बैसैत अछि ।
अधवयसू : भाए, जीवन, इजोत आ आत्माक कोन सम्बन्ध ?
पुरुष (१ : साफ सम्बन्ध छैक । इजोते जीवन छैक, आत्माक धुकधुकी छैक । हमर भटकबाक मुक्तिए ताही जीवनमे अछि । हमरा नव जीवन तखने भेटत ।
अधवयसू : तखन ई दीपकक कोन प्रयोजन ?
पुरुष (१ : जत सभतरि अन्हारक साम्राज्य हो, अपनो बाट देखाइत नहि हो, ओत्त कोनो वस्तुकू तकबाक हेतु प्रकाश त चाही, से ई दीप हमरा बाट देखबैत अछि । लक्ष्य धरि पहुचबाक हेतु ।
अधवयसू : मुदा हम त बड सहज बुझने छलिऐ जीवनके पएबाक बाट ।
पुरुष (१ : तें ने अहां वर्षहुसू भोतिआ रहल छी, ने स्वयं कतौ ठौर ध सकलौं आ ने अपन सखा(सन्तानकें ।
अधवयसू : (आश्चर्यसं) ई बात अहांकें कोना बूझल अछि ?
पुरुष (१ : मनुक्खक उदास चेहरा देखि हम ओकर व्यथा - कथा बूझि लैत छी ।
अधवयसू : तखन त आरो बात.....।
पुरुष (१ : हं, प्रत्येक सुखान्त क्षण आंगामे अबितो अहा लेल अबूह बनैत गेल अछि । खण्ड-खण्डमे प्राप्त अहांक सुख-जीवनक यथार्थमे दम तोडि रहल अछि आ तें अहां भटकि रहल छी इजोतक लेल ।
अधवयसूक आंखि डबडबा जाइत छैक ।ओ गमछासं आंखिमे भरि आएल नोरकबुन्नकें पोछैत अछि ।
"दुर मरदे ! तों त कमजोर मनुक्ख जकां हारि गेल लगैत छह । जखन इजोतक पता तोरा बुझल छह त अवश्य खोजि निकालबह ने !
अधवयसू कृतज्ञता भरल आंखि स पुरुष(१दिश तकैत अछि । संगीत कारुणिक भएगेल रहैछ । ओ पुरुष -१क हाथ पकड़िउठैत अछि । पीठ पर हाथ धए आगाूबढबाक उपकम करैत अछि कि महिलाक प्रवेश होइछ । स्वेतवस्त्र , कपार पर लाल गोल टीका । खूजल केस । हाथमे मशाललेने । अधवयसू आ पुरुष-१ सतर्क भ जाइत अछि । आश्चर्यसं महिला दिश ताकए लगैछ । प्रकाशक घेरा महिलापर पड लगैछ । महिला हाथमे मशाल लेने मंच पर एम्हर ओम्हर धुम' लगैछ । बैचैनी साफ देखि पडैत छैक ।
अधवयसू- (आगां बढि) महोदया, अहांक रौद्ररूप आ हाथमे मशाल । हम किछु जान' चाहैत छी ।
(महिला-कंकरा फुरसत छै जे अहांक बकबास प्रश्नक उत्तर दैत रहओ, हम

जल्दी मे छी ।

अधवयसँ - जल्दी त हमरो सबके है । लेकिन आगा जाए सं पहिने किछु जानब त जरुरी ने ।

महिला-नै, नै, हमरा कोनो लफड़ा मे नै पडबाक है । हम किछु खोजके लेल निकलली आ लगैअ भेटत जरुर ।

अधवयसू आ पुरुष-१ : (एक्केबेर) अएँ, खोज के लेल !

महिला- चौंकलौं कैला । किछु खोजब अपराध छै कि !

पुरुष(१ : (हंड़बडाक) नहि, नहि, से बात नहि । वास्तव मे हमहुँ सब किछु खोजहीला निकलल छी !

महिला -अहुं सब खोजेमे निकलल छी । औ कथी के खोज !

अधवयसू- से त कंनीक गुपचुपे है ।

महिला- वस, एहने खोज नेपालके नेता सब करैत रहल है । नयाँ सम्विधानके । संघीयता सहितक सम्विधान । चारिवर्ष कटलकै, नै भेटलै । आब फेर पाँच वर्षके लेल खोजमे लागल है ।

पुरुष(१: एह हमरा सवके खोज नेता सब जका नै छैक । हम सभ सवके हितमे खोजि रहल छी ।

महिला(-त अहाँके लगैअ, नेता सब अपने हितमे लागल है । जनताके हितके कोनो मतलब नै है !

अधवयसू : से हम की जान गेलिऐ । तखन चारि पाँच वर्षस घोघाउज करैअ आ देशके किछु निकास नै देलकै ।

पुरुष(१ : ओतबे कहाँ । चुनाव कराब बला सरकार सेहो सहमति सं बना नै सकल आ दोसरके कान्हपर बन्दुक ध कर दाग लागल है ।

महिला : इत हैबे करत । जै समाजमे नारीके इज्जत नै हएत, ओकर इज्जत आवरु सं खेलल जाएत । ओकरा मारल पीटल जाएत, तिरस्कृत कएल जाएत, ओइ समाजके उन्नति केना हएतै । केना क बनतै नयाँ सम्विधान, जैमे महिलाक सुरक्षाक गारन्टी नै होतै ।

अधवयसू(: बात सोरहो आना जाएज अहि, महोदया । हमरो सबके लगैअ, समाज महिला प्रतिक धारणमे परिवर्तन लाबओ, वेटा आ बेटीके समान रुपें प्रतिपालन करौ । तखने सब किछु हयत -सम्विधान से हो ।

महिला(: अहां सवके बातस हमरा हौसला मिलल है । लगैअ, अहां सभ हमर खोजमे सहायक भ सकैछी ।

अधवयसू(: पहिने हमसब कारण बूझव तखन ने ।

महिला(कारण साफ है । सम्विधान बनि नै रहल छै । समाजमे महिला हिंसा

बढि रहल है । अराजकता छै । संक्रमणकालक नामपर लूट मचल छै । शान्ति, सुख कतौ हेरा गेल छै । जे देखि परैछै ओ मुठी भरि लोकक रखैल भ गेल है । हम ताहीँ शान्ति, सुखक इजोतके खोजबाक लेल फिरिशान छी । रनेबने बौआ रहल छी ।

अधवयसू आ पुरुष(१: आहिरेबा । बात त मीलि गेलै । महोदया, हमहुं सभ त ताही इजोतक खोजी म`छी ने !

महिला(-तखन तं गजब भ गेल । एक स तीन भला ।

पुरुष(१ : हं, हं, चलू, कतबो कठिन बाट हएतै, आब हम सभ ओकरा ताकिए क छोडबै ।

महिला, पुरुष(१,आ अधवयसू सहटि क एक ठाम जम्मा भ, जाइछ । तखने महिला आगां बढि नारा लगवैछ('इन्कलाब, जिन्दावाद !' ई नारा मंचपर तीन चारि बेर लगबैत घुमैत रहंबाक चाहि । तखने पुरुष-२क प्रवेश । देखिते ई दूनू ठमकि जाइछ ।

पुरुष (२ ठेंठ धोती, गोलगला, माथमे गमछाबन्हने कान्ह पर हर-पालो, हाथमे बढकापैना । धरफराइत ओही बाटे जाइत । ओकरो नजरि दूनू गोटे पर पडि जाइत छैक । ओहो ठमकि जाइछ ।

अधवयसू : (टोकैत) भाए साहेब ! कनेक सूनितहू तू.....।

पुरुष -२ : (बाट कटैत) बाट छोडू । हम जल्दीमे छी ।

अधवयसू : एतेक जल्दी जएबाक प्रयोजन की ? अपने के छी ?

पुरुष (२ : (अगुता कए) हम कृषक छी । आ अन्हार स औनायल, इजोतक हेतु भागल जा रहल छी ।

दूनू गाटे अवाक् रहि जाइछ । एक्के बेर दूनूक मुहसू बहराइत छैक-इजोतक हेतु !

पुरुष (२ : हं यौ ! मुदा अहां सभ एना चौकलहू किए ?

पुरुष (१ : तकर साफ कारण अछि (हमरहु सभ इजोतेक खोजमे छी ।

पुरुष (२ : हमरा कोनो आश्चर्य नहि भेल । जखन सौंसे विश्वमे अन्हारक साम्राज्य हो, मुखौटाक ताण्डव नृत्य होइत हो, इजोत खोजनिहारक कमी नहि अछि । मुदा अहां दूनू बुत्ते इजोत ताकल नहि दैत ।

दूनू कनेक उदास भए जाइछ ।

एक गोटे छी - सुन्दर आ आकर्षक जीवनक अनुसन्धाता । तकर खोजमे लागल छी । दोसर डिबिआ ल इजोत तकै छी । दूनू दिन कटैत, वर्ष बितबैत अपनाके मारैत । बूझल अछि- इजोत कत्त छैक ?

दूनूमे उत्साहक संचार होइछ

एक्के संग : बूझल अछि !

पुरुष (२ : (आश्चर्य) बूझल अछि, अहू सभकें ?

अधवयसू : हं, हमरा बूझल अछि ।

पुरुष (२ : कत्त अछि ?

दूनू एक दोसराक मुह ताकय लगैछ । भाव एहन सन जे कही कि नहि ।

कह(कहू निश्चिन्त रहू, हम अहू सभ पहिने
दौडि कए ओत्त नहि पहुचब ।

अधवयसू : सूली पर टांगल अछि इजोत । (जोर सू ठहाका मारि हंसैत अछि) त की ।

पुरुष (२ : अहांक बांहिमे ताकत नहि अछि जे ओत्त स
उतारि लए जाएब ।

दूनू : (आश्चर्य स) हमर कथन पर अहाके कोनो
आश्चर्य नहि । की हम गलत कहलहू अछि ?

पुरुष (२ : नहि, अहां सत्य कहैत छी ।

दूनू : एकर माने अहां जनैत छी जे इजोत कत्त छैक ?

पुरुष (२ : नीक जका, अपन सभ समानक संग ओतए
हम लाब चललहु अछि । अहा सभ जकां हावामे खोजय नहि ।

अधवयसू : ओह !

पुरुष (१ : हं, एकटा बात आर बूझि लिअ ! हमरा इहो
बूझल अछि, ओ सूली कत्त छैक ।

दूनू : (फेर आश्चर्य मिश्रित प्रशन्नतासं कुदैत) कत्त
छै, सेहो बूझल अछि ?

पुरुष (२ : हं, यौ । तें ने भागल जा रहल छी । कतौ फेर
ने कोनो चण्डलबा ओत्तहु स ओकरा हरि लैक ।

पुरुष (१ : के अछि एहन ?

पुरुष (२ : अन्हारक राजा करिया मसान । हरने अछि
इजोतके । सूलीपर एखने बन्हने मात्र छैक ।
ओकर योजना खतरनाक छै ।

अधवयसू : की छै ओकर योजना ?

पुरुष (२ : सूली पर ठोकल इजोतके हाथ पैरमे कांटी
ठोकि टाकि देतैक आ नीचा उतारबाक सभ
संभावना समाप्त कए देतै ।

अधवयसू : धरती पर जे छै, से ?

पुरुष (२ : ओत्त ओकरे नामक मुखौटा सभ अछि । विद्रूप विभत्स !

अधवयसू : (आश्चर्यसँ) मुखौटा सभ ! अर्थात् इएह जीवन छै एतुक्का !

(ओकरा आगा पहिलुका मुखौटाबाला दृश्य
नाचि उठैछ । प्रकाशके गुम्म कए, पुनः
ताहि दृशयके देखाओल जा सकैछ । फलैश बैक जका)

पुरुष (२ : ओ सभ भ्रम थिक । असली त वर्षहु स सूली
पर टंगाएल अछि । हम ओकरा उतारय चललहू अछि ।

पुरुष (१ : ओकरा उतारबै कोनो ?

पुरुष (२ : ई हर-पालो देखैत छिऐ । आ ई पैना ?

पुरुष (१ : ह, देखै छिऐ । मुदा एकरा सभके इजोतक
उतारनाइ स कोन मतलब ?

पुरुष (२ : ई सभ मेहनत, बुद्धि आ लगनशीलताक सम्पति
अछि । एकरे प्रयोग स हम उतारबै इजोतके ।

अधवयसू : नहि बुझलिऐ किछु ।

पुरुष (२ : बुझबो कोना करबै । जिनगी प्राप्त करबाक
लेल ओकर विद्रपता स पहिने लडय पडत ।
सएह जोगाड़ अहा सभके संग नहि अछि ।

अधवयसू : हम आओर नर्भस भेल जा रहल छी ।

पुरुष (२ : हं सुनू । हर आ पालो सिढ़ीक दुनू ठाठ हैत ।
बडका पैना पौदान । आ पालो मे जे बान्हल
अछि ताहि जौर स पौदान बान्हल जाएत । ऐना
क चहरि पहूचि जाएब इजोत धरि ।
दूनू मुग्ध भए पुरुष- २ क इलम सुनैत अछि ।

दूनू : (एकके संग) की हमहू सभ चलि सकैत छी ?

पुरुष (२ : लगैए, अहू सभ आब इजोत धरि पहूचि
सकबाक हिम्मति जुटा लेने छी । चलू ।

तीनू आगा बढ़ैत अछि आ एक दू डेग चललापर फ्रिज भए जाइछ ।

गीत

हम इन्कलाब लाबि क छोडब
इन्कलाब हम लाबि क छोडब !
संघीयताके वात पर जे,

घोल फचक्का मंचा रहल है
बलिदानी युवा सभक छातीपर,
गुटबन्दी के बानर नचा रहल है ।
सुख, शान्ति केर प्रखर इजोरिया
कालक हाथें बन्हा रहल है ।
घेरल इजोतके लाबि क छोइब
इन्कलाब हम लाबि क छोडब !

अन्तमे सभ पात्र फ्रिज भ गेलाक वाद ई गीत पृष्टभूमिसं गाओल जाएत ।

कमशः अन्हार मंचपर पसरि जाइछ ।

बाल नाटक

हम पढब लिखब विद्मान बनब ।

प्रथम दृश्य

एकटा आंगन । एकटा पाँच वर्गक छात्र रोशन । ओसारापर मुँह लटकौने बैसल । दोसर साथी बजबऽ अबैत अछि ।

संगी-रे रोशन,इसकुल नै जैबही की ।

रोशनके चेहरा आरो मलिन भ जाइछे ।

संगी-दुर, डर लगैहौ । रे पढ मे कोन डर ।

रोशन-डर कैला होतै ।हमरा माय पिताइअ आ खेत जायला कहै है । बेसी पढ़ि कऽ की होतौ । बापे जकाँ विदेशे जएबे किने ।

दोसर विद्यार्थी सम्फबैत छैक(पढि लेबे तँ अही ठाम काम भेट सकै छौ । विदेशो जएबे तै स नीक काज बेसी पाइ भेटतौ ।

रोशन- से त हमरो मन होइअ । माय नै जाए दैअ , की करु ।

माय- रे मोचरुआ, हमर आगि उठबै छे । जो मर जत जैबे तत । तोरा स कोन सुख । बाप छिछिआइ छौ कतारमे । बुढबा भरि दिन खो खो करैछौ । दाना जोरु आ मुँहमे अहरा परसू । आ तों काम चोर, पढाइ करऽ जएबै त घरकें काज के करतै । तोहर परदादा ।

दोसर विद्यार्थी सकदम्म भऽ जाइछ । किछु हिम्मत कऽ महिला सँ कहैत छैक(काकी । पढाई नहियो रोकि कऽ काम कर सकैहै किने । माय कहै छै (पढला सँ नीक नुकुत खायला भेटैहै । बापो मायकें सेवा नीक जकाँ कऽ सकै है । छुटी आ खाली समयमे हमहु घरमे मायकें संग काज करैछी । रोशनकें पढाई नै छोडबियौ ।

माय-जो जो अपन माइ बापके पढबिहे । हमरा नै सिखा ।

संगी एक नजरि रोशनके देखैत आंगनस बहरा जाइत अछि ।

दोसर दृश्य

कक्षा आठ । वर्ग शिक्षक हाजिरी बजा रहल अछि । विद्यार्थी सभ उठि

उठि क्ऽ अपन उपस्थिति जना रहल अछि। शिक्षक प्रशन्न। आइ त नीक उपस्थिति अछि।

शिक्षक-अभ्कुा विषय की छै

विद्यार्थी सब-मैथ छै सर।

शिक्षक- त ठिक छै।

बोर्डपर किछु लिख लगैत छैक....... ।

अन्हार।

पुनः इजोत। दृश्य पूर्ववत

अन्तिम घंटी। शिक्षकक प्रवेश। कक्षामे नजरि दोगबैत अछि। आधा सँ बेसी खाली। ओ आश्चर्य सँ प्रथम विद्यार्थी सँ पुछैत अछि (भ्कगरु , की भेलै। आधा सँ बेसी विद्यार्थी खाली छौ।

भ्कगरु -सर, सब टिफिनमे भागि गेलै॥

शिक्षक-रोकलही ने।

भ्कगरु-से के मानतै। कोइ खाय लाथे। कोइ घरमे काम है तै लाथे। कोइ गछुलीमे खेल लाथे।

शिक्षक-हेड सरकेँ नहि कहलही!

भ्कगरु-ओकरो बुते नै मानै है। कय दिन त डंटा लऽ कऽ गेटे पर ठाढ़ रहै है। तैयो दोग दाग दऽकऽ पडा जाइ है।

शिक्षक-आइ विज्ञानकेँ घंटी छौ नै।

सब विद्याथी(-जी सर,

शिक्षक-तखन ले, हम विज्ञानकेँ सूत्र प्रैक्टिकलमे बतबैत छीयौ।

भ्कगरु -सर, जे चलि गेल है, तकरा त छुटि जएतै नै।

शिक्षक-त, की ओकरा लेल कोर्स पछुआ दिऔ! हमरा उपर नै है कोइ। जे नै अएलै उ हुसलै।

सब विद्यार्थी(ठीक छै सर बतबियौ।

शिक्षक प्रयोग कर बला सामग्री सरिआबऽ लगैत अछि।

अन्हार

तेसर दृश्य

कक्षा नव। शिक्षक अबैत अछि। विद्यार्थी उठि सम्मान करैछ। दूटा विद्यार्थी पछाडी बेंचपर बैसले रहि जाइछ। शिक्षक एहि बातकेँ देखितो तुल नै दैछ। सब बैठि जाइछ।

शिक्षक- आइ हमसभ सामाजिक शिक्षा पढबै।

विद्यार्थी सब-हँ, सर!

शिक्षक-सामाजिक अध्ययनकेँ एकाइ ४ सँ हमसब पढब। एहिमे सामाजिक समस्या आ समाधानक बात आएल छै। चारि किसिमकेँ सामाजिक समस्या होइछै। एक क्षेत्रगत समस्या, दू भाषिक समस्या, तीन लैंगिक समस्या आ चारि वर्गीय समस्या। बुभ्कलही।

बैसलहबा मे सँ एक विद्यार्थी-सर हमरा त किछो बुभ्कऽ मे नहि आबि रहल है।

दोसर जे कानमे मोबाइलकेँ कोड लगा प्रायः गीत सुनि रहल अछि, बजैत अछि -एह एहि सँ त निक हमरा गीते लगैअ।

सभ विद्यार्थी भभा कऽ हँसि दैछ।

शिक्षक खिसिआ जाइछ- रे , तोरा पढ के नै हौ त क्लाशस निकलि जो। दोसरकेँ कैला डिस्टर्ब करै छीही।

कोड बला छात्र(सर, ककरो पढ़केँ मन नै है। अहाँ पढबै छिऐ से कोइ बुभिते नै है। सब भ्कुठे केँ हँ हँ कहैअ।

शिक्षक एक क्षण चुप्प रहि पूरा कक्षामे नजरि खिरबैत अछि। विद्यार्गीके मनोदशाके गमैत अछि। फेर रोषस कजैत अछि(त ले, तों सभ पढबे नै करबे त हम कैला चिकरु। रह तोहीसभ।

शिक्षककेँ बहराइते क्लाशमे हँसी ठठाक शोर सुनि पडैछ।

चारिम दृश्य

गछुली। पाँच सात टा विद्यार्थी भ्कगडा कऽ रहल अछि। एक दोसर पर मुक्का मुक्कीकेँ प्रहार करैत। एकटाकेँ हाथमे सटका रहैत छैक। दोसराक कपार पर पटकि दैछ। ओकर माथ सँ सोनित वहऽ लगैछ। सभ विद्यार्थी भागाभाग भऽ जाइछ।

पाँचम दृश्य

कक्षा आठ। वर्ग शिक्षक हाजिरी बजबैछ। दूटा विद्यार्थीपर ओकर नजरि अटकि जाइछ।

शिक्षक - रविन्द्र आ महेश। तो दुनू गोटे काल्हि टिफिन के बाद नहि रहए। कत्त गेल रही। आ ई तोरा सभके मथापर आ अंगुरीमे की भेलौ अ?

दुनू किछु नै बजै छै। माथ निहुरा लैछ।,

शिक्षक-रे बाज न, की भेलौ। एना कक्षा स भगविही आ दोसरोके भगैवही त स्कुल केना चलतै ?

तेसर छात्र-सर, ई दुनू की बाजत। काल्हि टिफिनमे भागि कऽ दुनू

गछुलीमे मारिपिट कएलक ।

शिक्षक-रे , ठीके !

तेसर छात्र-देखै नै छिऐ । रविन्दरकँ कपार पर पट्टीसाटल है आ महेशकँ कनगुरिया अंगुरीमे सेहो पट्टी है ।

शिक्षक आगा बडि क(देखियौ,

शिक्षक दुनूकँ पट्टीपर नजरि खिरबै छै ।

शिक्षक रोष आ क्षोभस(आब इहे रहि गेलौअ तोरा सबकँ पढौनी । एक त नियमित कक्षामे नै अएबे । अएबे त टिफिनमे भगबे । आ भागि कऽ मारिपिट करबे । अगिला एकसाल के बाद एसएलसी छौ । माय वाप आस लगौने छौ(हमर बेटा पढत (लिखत । आ तोसभ बदमाशी करै छीही ।

रविन्द- सर महेशरा हमरा सभ दिन धाक देखबैत रहैत छल । से ओइल सधब ला काल्हि नीकलि गेलिऐ ।

महेसर-नै, सर ई की कहत । रविन्दरा स्कुलमे गन्दा गन्दा बात बजैत रहै छै । छात्रासभकँ देख देख कऽ हँसैत रहैछै । बाहरो अन्ट सन्ट बाजि कऽ हमरा गारि पढैत रहैअ । त हमहुँ भीडि गेलिऐ ।

शिक्षक-ठीक छै, महेसरा धाक देखबै छलौ तोरा, रविन्दरा तोरा गारि पढैत छलौ । त दुनू गोटे हमरा कैला नै कहले । हेड सरकँ कैला नै शिकायत कैलही । अपने भीडि गेलै । पढाइ लिखाइ छोडि कऽ गुण्डागर्दी मारि पीट........... ।

दुनू चुप्प

तो सभ मारिए पीट कऽ स्कुलकँ नाम बदनाम कर चाहै छीही त ठीक छै । हम हेडसरकँ तोसभकँ बारेमे स्कूल सँ नीकालि देबऽ के सिफारिश करैत छिऐ । खूब लडगऽ बहरामे ।

रबिन्द-नै, सर वाप माय मारि देत हमरा सभकँ ।

शिक्षक-से मारि करैत बेर आ स्कुल सँ भगैत बेर नहि बुझलही ?

महेश्वर-हमसभ आबेशमे आबि गेल छलिऐ सर !

शिक्षक-हम एक्के शर्तपर छोडि सकै छियौ ।

दुनू छात्र एक्के बेर -की सर ।

शिक्षक(तोसभ टिफिनमे नै भगबे आ एक भऽ क पढबे । तखने हम एक मौका देबौ ।

दूनु एक्केबेर बजै छै- होतै सर ।

छठम दृश्य

विद्यालय कम्पाउण्ड ।टिफिनकँ घण्टी लगैछै । पीयन हाथमे छौकी लऽ कऽ मूल गेटपर दौगैत छैक । हेड सर सेहो साकांक्ष भऽ जाइयत छथि । विद्यार्थी सभ हल्ला करैत निकलैत छैक । किछु खेलकूदकँ सामग्री लेबऽ लेल अफिस दिश जाइत अछि । किछु विद्यार्थीं मूल गेट दिश बढैत अछि । मुदासबकँ हाथ खाली छैक । पुस्तक कक्षामे छोडि आएल अछि । पीयन आश्चर्य सँ देखैत अछि ।

तखने रोशनकँ माय रोशनकँ हाथ पकडने विद्यालयमे प्रवेश करैछ ।

ओकरा देखिते हेडसर पुछैत छै - की छै, एना किए पकडने छी ।

रोशनकँ माय बजैत अछि-रोशन हमरे कारण स स्कुल नै अबैत रहए । हमरा लागल रहै पढाइ स घरके काम नम्हर है । से गलत रहै । आब हमर बेटा सब दिन इसकुल आएत ...।

हेडसर-ठीक छै , इएह बुझकँ चाही माय वापकँ । सन्तान सुखी त परिवारो सुखी ।

हेडसर ओकरा कक्षा दिस पठा दैत छथि । घंटी लगैत छैक । कक्षा शुरु भऽ जाइछ ।

सातम दृश्य

कक्षा नवो । विद्यार्थीसभ आबि कऽ अपन सीटपर बैसि जाइछ । अखनो विषय छै सामाजिक शिक्षाक । पाँच मिनट भऽ जाइछ शिक्षक नहि अबैत छैक । प्रथम विद्यार्थी रमेश अगुता जाइछ ।

ओ बजैत अछि(आइ सर नहि आयल है की ?

रबिन्द्र-आएल है । देखने छलिअैअ ।

रमेश -त कैला ने अबै छथ ।

सभ ओइ दुनू छौडा दीशि ताकऽ लगैत छैक । ओ दुनू ओहने निश्चिंत गप्पमे लागल । एकटा कानमे कोड धएने गीत सुनैत ।

प्रथम छात्र रमेश रोष सँ - रे पंकज, तोरा सवकँ कनिको लाज विचार नै होइछौ । एतेक छलफल भेलाके बादो तोरासभकँ आदत नै छुटलौअ ।

पंकज-रे कथीक आदत । हमकी करै छियौ ।

रमेश-तो पुरा कक्षाके वर्वाद कऽ रहल छीही । विमल सर एतेक नीक पढबै छथ तैयो तो ओकरा मजाकमे उडबैत रहैत छीही । पुरा कक्षा तोरासभकँ बदमाशी स आब तंग आबि गेल छै ।

निरज-त हमसभ की करियौ ?

रमेश-तोसभ पढ़ चाहै छे की नहि ?

पंकज-पढ त चाहै छी, मुदा विमल सर स नै।

रमेश-कैला ?

पंकज-एक दिन टिफिनमे पूनमकेँ किछु कहि देने रहिऐ त एक चमेटा हमरा घिचि लेने रहे।

रमेश-वस, तो कोनो छात्रा संग अभद्र व्यवहार करविही आ तोहर शिक्षक तोरा दण्ड देलकौ तँ ओ खराब भऽ गेलै ?

दुनू चुप्प

रमेश-सुनु सव कोइ, आब इहे दुनू एहि कक्षामे रहत की हम सभ रहब।

सब विद्यार्थी एक स्वरस-चलै चलू कक्षा स।

सब छात्र अपन अपन पुस्तक वस्ता लऽ निकलऽ लगैछ।

दुनू छात्र एक्के बेर उठि कऽ - भाइ, हमरा सँ गलती भऽ गेलौ। हम कान पकडै छी। कशम, हम आब किछु नै बाजब। तो सब नै जो।

रमेश - एकर एक्केटा शर्त होतै। तों दुनू जा कऽ विमल सर सँ क्षमा मांगि कऽ क्लाशमे लबही।

दुनू कनेक काल थकमकाइछै। फेर, ठीक छै कहि कक्षा सँ निकलि जाइछ।

आठम दृश्य

विद्यालयक कम्पाउण्ड। शिक्षक आ विद्यार्थी सभ आगा पाछा ठाढ अछि। सभ जेना ककरो प्रतिक्षा क रहल हो। तखने पंकज आ निरज अपन वर्ग शिक्षकके हाथके पकडने कम्पाउण्डमे अबैत अछि सभक चेहरापर खुसीक मुस्कान दौडि जाइछ। विद्यार्थीसभ दू डेग आगा बढि कऽ सामूहिक गीत गाबऽलगैछ।

गीत

पढब लिखब विद्मान बनब
देशक गौरब पहिचान बनब
इसकुलकेँ करब नाम हम
गाम समाजकेँ शान बनब।
हम पढब लिखब विद्मान बनब॥
आपसमे हम मिलि जूलि कऽ रहबै
फूहड बचन ने ककरो कहबै

विद्यालयमे नियमित अएबै
शिक्षा लेल हम कष्टो सहबै।

अपन परिश्रमकेँ बलपर निश्चय
अन्हरिया रातिक चान बनब।
हम पढब लिखब विदमान बनब।
देशक गौरब पहिचान बनब॥

गीतक बाद मंच अन्हार। समाप्त

आ अन्तमे..................

जहिया हम लेखन शुरु कएने रही बड कम लोक नियमित लिखैत रहथि। १९६४ई.क मिथिला मिहिर(पटना)मे पहिल बाल कथा छपल रहए। जं कि पूर्णकालिकलेखन प्रकाशनमे हम लागि गेलहुं , हमरा लगभग सभ विधामे लिखबाक स्थिति उत्पन्न भ गेल आ तखन लिखैत चलि गेलहुं। ताहिमे गामघरमे खेलबा जोकर नाटको रहए। कएकटा नाटकक लेखन आ मंचन भेल। मुदा औपचारि रुपे नाटक लिखबाक अवसर भेटल नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक तत्कालीन उपकुलपति डा. ईश्वर बरालक आग्रहपर जखन प्रतिष्ठानमे नाटकमहोत्सबक सन्दर्भमे मैथिली नाटकक खगता भ गेलै। ओत नाटक नहि गेल रहै से बात नहि रहै। तहियो प्रसिद्धी पाबिचुकल एकटा वरिष्ठ नाटककारक नाटक पता नहि किएक अस्वीकृत भ गेल रहैक। सात दिनक मात्र समय देल गेल रहए। आ ताहि सात दिनमे लिखल नाटक थिक एकटा आओर वसन्त। जे बादमे खूब प्रशंशित भेल आ फिल्मक रुपमे नेपाल टेलिविजनसं प्रसारित सेहो होइत रहल।

एहि घटनाक बाद हम मंचक हेतु नाटक लिखैत रहलहुं आ तकर प्रकाशन सेहो होइत रहल। हमर लिखल लगभग प्रत्येक नाटकक मंचन भ चुकल अछि आ होइत रहैत अछि। बस्तुतः हमर नाटक छोट होइत अछि, आधा घंटासं एक घंटा धरिक। हं,तखन निर्देशक चाहथि त समय बढाइयो सकैत छथि।

एम्हर मंचीय नाटक खोजबाक कम बढल अछि। ग्रामीण मंच दिशक रुचिके देखैत सहज आ सस्त नाटकक पुस्तक नाट्यकर्मीसभकें उपलब्ध भ सकैक तएं हम अपन तीन गोट नाटकक संग्रह प्रस्तुत करबाक प्रयास कएल अछि। एहिमहक दू नाटक आ बौधु बाजि उठल आ सूलीपर ईजोत हमर बेर बेर मंचित आ प्रशंशित नाटकसभ अछि। एकटा नया नाटक वाल नाटक अछि जे स्कूलीया वातावरणके प्रतिध्वनित करैछ।

आशा अछि सभतरहक मंचक हेतु ई नाटकसभ उपगोगी हएत।

राम भरोस कापडि भ्रमर



राम भरोस कापडि भ्रमर

नेपालमे सर्वाधिक मंचीय नाटकक लेखक,रानी चन्द्रावती, एकटा आओर वसन्त, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक, भैया अएलै अपन सोराज आ एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक संग्रहक रचयिता । विभिन्न विधाक लगभग तीन दर्जन पुस्तकक श्रष्टा । नेपाल भारतक अनेको प्रतिष्ठित संघ संस्थासं पुरष्कृत,सम्मानित ।

भ्रमरक मंचित नाटकक दृश्यसभ



राजा सलहेस(राजबिराज)



भैया अएलै अपन स्वराज(दरभंगा)



जट जटिन(काठमाण्डू)

मोल रू. १००/-टका